

सम्पादकीय

श्रीमद्भागवत पुराण : आनन्दमय जीवनयापन की विधियां

मित्रों।

रामायण और महाभारत की भांति श्रीमद्भागवत पुराण भी लोगों के यथोमय ढड़ग से अर्जित शुभ के माध्यम से आनन्दमय जीवनयापन की विधियों के प्रयाणपन पर ही कन्फिट है। छोटी-बड़ी सैकड़ों कथाओं एवं उपाधिकारों के माध्यम से इसमें मृत्यु की विभीषिका से लोगों को उबरने हेतु यही बताया गया है कि, जो जन्म लेता है, उसे एक न एक दिन मृत्यु के स्तर से जाना ही पड़ता है। जिसने भी जन्म लिया है, चाहे जिस भी प्रास्थिति और रूपरंग को धारित किया है, उसे मृत्यु की गति मिली ही है। मृत्यु से बचने का कोई भी उपाय नहीं है।

2-मृत्यु वैसे तो सुनिश्चित है। उसकी तिथि, उसका समय, उसका स्थान और माध्यम आदि सभी सुनिश्चित हैं, पर इनकी पूर्व में जानकारी किसी के पास नहीं होती है। मृत्यु के इस रहस्य से अभी तक आवरण नहीं उठ सका है।

3-महाभारत में एक कथा आती है कि, अर्जुन के पौत्र महाराज परीक्षित को श्रुद्गीरपि ने श्राप दिया था कि, महाराज की सातवें दिन नाराज तक्षक के द्वारा काटे जाने से मृत्यु होगी।

वैसे तो मृत्यु अपरिहार्य है, पर जिसे मृत्यु की विभीषिका से मृत्यु पूर्व ही क्षणप्रतिक्षण मृत्युजय्य कट्ट का अनुभव करने लगता है। इसके साथ ही वह जीवन की लालसा लिए मृत्यु से बचने का हर उपक्रम अपनाता ही है। यही सब महाराज परीक्षित ने भी अनुभव किया था। मृत्यु से बचने का हर संभव प्रयास भी किया था।

उनके द्वारा के विद्वान् लोगों ने मृत्यु की विभीषिका से उबरने हेतु श्रीमद्भागवत की कथाओं का उन्हें श्रवण कराया, तक्षक काट न सके, इसके लिए गंगा के किनारे मचान पर बैठने का परामर्श दिया गया। चापे-चापे पर सहस्र अंगरक्षक तैयार किये गये।

श्रीमद्भागवत की कथाओं के अन्त में यही विधि कथाओं का उन्हें श्रवण कराया, तक्षक काट न सके, इसके लिए गंगा के किनारे मचान पर बैठने का परामर्श दिया गया। चापे-चापे पर सहस्र अंगरक्षक तैयार किये गये।

यह कथा है कि, तमाम सुखाधारे को ध्वस्त करता हुआ तक्षक, पुष्पों के बीच छुप कर राजा के पास पहुंचता है और पलकझपकते ही उहें काट लेता है। तक्षक के द्वारा काटे जाते ही मृत्यु, महाराज परीक्षित के सामने खड़ी हो कर साथ लगने का अनुरोध करती है, तब वह उसके साथ सहजभाव से हो लेते हैं।

4-एक प्रश्न सहज रूप से उठता है कि श्रीमद्भागवत कथा सुनने पढ़ने या कथाओं के मनन से मुक्ति मिलती है या नहीं?

उक्त प्रश्न को श्रीमद्भागवत पुराण के माहात्म्य में उत्तरित करते हुए बताया गया है कि इसके व्रणपात्र से व्यक्ति मृत हो जाता है। इस पुराण में एक कथा धूंधकारी की भी है। धूंधकारी बहुत ही बड़े स्तर का कुमारी था, जिसकी जलने के कारण अकाल मृत्यु हो गयी थी, इस कारण वह प्रेतयोनि में वर्षा से था, जिसकी मुक्ति के निमित्त उसके एक भाई, गोकर्ण ने सात बांस का एक बांस में उसका आहवान किया और उसे श्रीमद्भागवत कथाएं सुनाया। कथा है कि, प्रतिदिन कथा की समाप्ति पर बांस का एक पोरे फट जाता था इस प्रकार सातवें दिन कथाओं की समाप्ति पर बांस का सातवें पोरे भी फट गया और उसमें से धूंधकारी की आत्मा बाहर निकल कर परमाणुम अर्थात् भगवान् के घर के लिए प्रस्थान कर गया। उसी समय से आज तक यह मान्यता चली आ रही है कि, श्रीमद्भागवत कथाएं सुनने से श्रोताओं को मुक्ति मिल जाती है। उसी समय से कथा की स्थापना के समय सात पोरों को कौन कह, बांस में सिकन तक नहीं दिखी।

ऐसे में यही श्रीमद्भागवत पुराण माहात्म्य में इसके श्रवण से मुक्ति की बात कही गयी तो इसी मानने या न मानने, दोनों के पक्ष में समान रूप से स्थितियां विद्यमान हैं।

ऐसी स्थिति में एक प्रश्न और उत्तर है कि यदि यह सुनिश्चित कर लिया जाय कि श्रीमद्भागवत की कथाओं से श्रवण से मुक्ति नहीं मिलती है, तब भी इन कथाओं का श्रवण, पठन-पठन करना चाहिए या नहीं?

वरन्तु यह सुनिश्चित कर लेने पर भी कि, श्रीमद्भागवत पुराण महात्म्य में जो कुछ भी लिखा है, उसका सत्यापन न हो पाने के कारण या उसमें सत्यापनीय धर्म न होने के कारण वे सब झूठ का पुलिन्दा भर हैं, फिर उसके अर्थात् श्रीमद्भागवत की कथाओं पठन-पठन करना ही चाहिए। उनका श्रवण, पठन-पठन से भले मुक्ति मिलती है, यह प्रमाणित न हो सके, करे पर उन कथाओं में जिन लोगों का चरित्रविक्रिया किया गया है, उनके चरित्र से स्वयं को शिद्धित कर हम उन उचाइयों को छू सकते हैं। जिन्हें उन्होंने छुआ था, या उन सकटापन्न स्थितियों से बच सकते हैं, जिन त्रुटियों के कारण उनका जीवनपथ संकटापन्न हुआ था। इन कथाओं का अध्ययन, पठन-पठन, इनमें वर्णित घटनाओं के माध्यम से जो सीख दी जा रही है, उसे ग्रहण करने के लिए श्रीमद्भागवत की कथाओं का श्रवण, पठन-पठन एवं चिन्तन-मनन करना आवश्यक है। यह माहारे वर्तमान के लिए भी उपयोगी हो सकती है, इसके बुद्धि से इनके पठन-पठन या श्रवण-मनन की आवश्यकता है।

5-उक्त से सुस्पष्ट है कि मृत्यु के भय से मुक्त होना आनन्दमय जीवन के लिए अपेक्षित है, न कि जीवन से मुक्ति के लिए। ऐसे में श्रीमद्भागवत की कथाओं का पाठ, श्रवण, मनन एवं निदियासन आदि मृत्यु की विभीषिका से मुक्त होने के लिए करें, ताकि श्रीमद्भागवत पुराण में जिन लोगों के उत्थान-पठन की कथाएं हैं, उनके उत्थान के लिए जो कारक रहे हैं, उनका अनुसरण कर हम भी उत्थान की उन उचाइयों को छू सकें जो अतीत में लोगों छुआ था या उन त्रुटियों से बच सकें, जिनके कारण उनका जीवन संकटापन्न हो सका था।

यदि मैं श्रीमद्भागवत के उत्थान-पठन की कथाओं से श्रवण करें, ताकि श्रीमद्भागवत पुराण में जिन लोगों के उत्थान-पठन की कथाएं हैं, उनके उत्थान के लिए जो कारक रहे हैं, उनका अनुसरण करना चाहिए, मुक्ति के लिए नहीं। यह जीवन के लिए उपयोगी है, इसका परीक्षण किया जा सकता है, हाँ यह कपोल कल्पना की जा सकती है कि इनमें मुक्ति भी मिलती है।

आप सब श्रीमद्भागवत की कथाओं को हृदय-ङ्गम करें, मुक्ति के लिए नहीं अपितु यशोमय ढड़ग से अर्जित शुभ के माध्यम से आनन्दमय जीवन के लिए, इसी कामना के साथ-

शिवशंकर द्विवेदी।
ये लेखक के अपने विचार हैं।

हिन्दू देव प्रकाश शुक्ला ने प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह एवं अन्य मंत्रियों से किया भेट

उत्तर प्रदेश स्वतंत्र देव सिंह ने राष्ट्रीय युगा वाहिनी परिवार की साराहना की एवं भविष्य में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया एवं समस्त मंत्रियों ने राष्ट्रीय युगा वाहिनी परिवार का आभार व्यक्त किया।



शुभकामनाएं दी और भविष्य में हर संभव सहयोग प्रदान करता रहगा ऐसा आश्वासन समस्त मंत्रियों को दिया तथा उन सभी से आश्वासन लिया कि पूर्व से भी अच्छा शासन यह सभी मंत्री चलाएंगे और उत्तर प्रदेश को और भी उत्तम बनाने में सभी मंत्री और विधायक अपने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करके योगी और मोदी का नाम विश्व पतका की तरह के लहराएं।

बीकेटी विधायक योगेश शुक्ल का समारोह पूर्वक किया गया स्वागत

बीकेटी विधायक योगेश शुक्ल का समारोह पूर्वक किया गया स्वागत नायर, आरएन त्रिवेदी, नदिनी मिश्रा, अजय तिवारी, मनोज कुमार मिश्रा, ऋतु राज तिवारी, विक्रांत खंड 1 के सचिव संजय मिश्रा, रविन्द्र सिंह, राम हर्ष, प्रकाश नारायण, नरेंद्र गुप्ता, प्रतिभा शाही, मनिका कुमारी, धर्मेन्द्र



सोनी, राकेश रिंग, अरुणेंद्र त्रिपाठी, रामनाथ शुक्ल, भागवत मिश्रा, के एस त्रिपाठी, अविना शापे एवं अन्य सचिवों का समारोह हो गया।

महिला पीजी कॉलेज की टीम अव्वल : रोवर्स रेंजर्स समागम में प्रथम स्थान लाकर पीयू का नाम किया रोशन

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीमद्भागवत की प्रथम प्राप्ति की अवधिक्रम में एक विश्वविद्यालय आजमगढ़, पूर्वांचल विश्वविद्यालय रोवर रेंजर टीम ने विगत दिनों आयोजित तीसवां वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय रोवर रेंजर समागम में रेंजर वर्षा में जीता का श्रेष्ठ सिर्फ महासमिति के विवरण की अवधिक्रम के सदस्यों का विवरण दिया गया है। और इस कार्यक्रम के सचिव कर्नल एवं एन पाण्डेय हैं विधायक जी ने कहा कि हमारे चुनाव में इस क्षेत्र में मुख्य रूप से महासमिति ने हमें पूर्ण सहयोग दिया है और इस क्षेत्र में जीत का श्रेष्ठ सिर्फ महासमिति को जाता है। एवं मार्च के विवरण की अवधिक्रम के सदस्यों का विवरण दिया गया है।

सोनी, राकेश रिंग, अरुणेंद्र त्रिपाठी, रामनाथ शुक्ल, भागवत मिश्रा, के एस त्रिपाठी, अविना शापे एवं अन्य सचिवों का समारोह हो गया।

महिला पीजी कॉलेज की टीम अव्वल रेंजर्स समागम में जीता का उपर्युक्त रोवर्स रेंजर्स का नाम दिया गया।

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीमद्भागवत क

